सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 194

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 39
फरवरी – 2021

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

गुरूबंधु भगिनियों

पिछले अंक 192 से आगे...

यदि किसी को इस प्रार्थना में जो उद्देश्य अभिप्रेरित है उसका अनुभव लेना हो हमारे जीवन में हमारे जो इष्ट मित्र, पारीवारिक रिश्तेदार है जो कि प्राप्त जीवन में समस्याएँ दुःख, अशांति का सामना कर रहे है। उन्हें किसी भी प्रकार का निराकरण सूचित करने के बजाये, उस परिवार के नाम का उल्लेख कर, "हे भगवन्ता नाराणणा" इस प्रार्थना हो एक हप्ता या पांच हप्ते तक कहें और उसका लाभ परिचित व्यक्तियों को किस प्रकार से हुआ इसका अनुमान देखें। और उसका अनुभव प्राप्त होने पर आपको पता चलेगा कि आप भक्तों को कार्यारम्भ में सुझाई, जगद्गुरू श्री साईनाथ महाराज जी ने सुझाई हुई यह प्रार्थना कितनी विश्व व्यापक है। इसकी प्रचिती प्राप्त होगी। इस प्रार्थना में किसी भी देवदेवता, धर्म का या जातिबांधवों का उल्लेख न होने से, विश्व के विश्व बंधुत्वभाव की अमानत जिन्हें गुरूकृपाशीर्वाद के रूप में प्राप्त हुई है, यदि उनके वाणी द्वारा इस उच्चार घर–घर में होगा तो उसके पड़साद (परिणाम) सम्पूर्ण त्रिभुवन में में निर्माण होकर जगत के अखिल मानवजाति को निश्चित ही उसका लाभ होगा। इस प्रार्थना को कहने के लिये किसी पूजन–अर्चन, व्रतवैकल्य, मन्नत इत्यादि विधियों की आवश्यकता न होकर, जगत के दुःखीमानवों के मन में जीवन के प्रति आदर, पूज्यता निर्माण कर, इस प्रार्थना में जो कि गुरूकृपाशीर्वाद स्वरूप है, ऐसी प्रार्थना में आप अपने स्वयं के मन का समावेश करोगे तो मन के सामर्थ्य से त्रिभुवन के दुःखों का निवारण कैसे होता है, इसका अनुभव आपको प्राप्त होगा।

आज आप जो भी देवदेवतार्जन या धर्मपरत्वे कुछ विधि करते हो इसमें व्यक्तिगत स्वार्थ के अलावा आप दूसरों के कल्याणार्थ कुछ कार्य कर रहे हो

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

इसका अनुभव नहीं प्राप्त होता। परन्तु प्रार्थना में अपना, परिवार का एवं जगत के अन्य दुःखी लोगों का समावेश करने से, जब प्रार्थना के माध्यम से, प्राप्त कृपाशीर्वाद को दूसरों के लिये खर्च करते है, उस वक्त सद्गुरू को धन्यता महसूस होती है? ओर वे हमारे ऊपर अधिक कृपाशीर्वाद की वर्षा करते हैं। और हमें हमारे अनजाने में अधिक कृपाशीर्वाद की अमानत प्राप्त होती है। इसके उलट कई बार हम अधिक काल तक जप–तप साधन आदि मार्गों का अवलम्ब करने के बावजूद कृपावंत नहीं होते। इसलिये आपसे विनम्र विनती है कि आप उन मार्गों का अवलम्ब न करें। अब भविष्य के लिये आप भक्त के कल्याणार्थ किसी नये साधन या सिद्धसाधन सूचित करने की आवश्यकता बाकी नहीं हे। मानव जीवन का सार्थक होने के लिये जिन साधनों के अस्तित्व की आवश्यकता थी उन सर्वसाधनों को गुरू ने सिद्ध कर हमरे सुपुर्द कर दिया है। उनका योग्य विचारपूर्वक, योग्य कारण के लिये सदुपयोग हो केवल इतना ही कर्त्तव्य भविष्य के लिये हमारे लिये बाकी रखा है। इस कर्त्तव्यपूर्तता को आप भक्तों ने मनोभावनापूर्वक करने से ही आप जो "श्री सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय" करते हो, इसे कहने का सही मायने में अर्थ याने इस अलौकिक अवतारी पुरूष का जो कार्य, उस कार्य का लाभ जिन भक्तों को हुआ, उनकी वाणी द्वारा इस अवतार कार्य के जयजयकार का निनाद जगत के अंत तक होता रहे, ऐसी श्री जगद्गुरू साईनार्थ महाराज जी के चरणों में विनम्र प्रार्थना है।

जैसा कि ऊपर निवेदन किया गया है उसके अनुसार वाड़ी के वास्तव्य में शक्तिपीठ के हितसम्बन्ध में जैसा महत्वपूर्ण कार्य भाग किया गया, उसी प्रकार से आपके लिये आसान एवं सुलभ साधनामार्ग का अवलम्ब जिसमें किसी भी अतिरिक्त बंधनों का भार आपके जीवन पर नहीं डाला जाये और किसी भी औपचारिक विधियों की आवश्यकता न हो ऐसा साधन सूचित करना था, वह याने "ऊँकार साधना" है। आजतक जगत में अनेक अवतारी पुरूषों ने अवतार लिया, परन्तु जिस दत्त परम्परा में श्री नृसिंह सरस्वती अवतीर्ण हुए। उनके मुख से जन्मतः ही ऊँकार ध्वनित हो रहा था। यद्यपि मैं 12 साल की आयु से ऊँकार साधना कर रहा था। फिर भी उस साधना का बीज तत्व याने उत्पत्ति, स्थिति, लय ऐसी त्रिगुणात्मक धारणा जो कि बीज रूप से ऊँकार में है, उसे स्वामी जी के कृपाशीर्वाद से सिद्ध स्वरूप में प्राप्त किया गया और आप भक्तों को दिक्षांत विधि परत्वे उसी तत्व की साधना सूचित की गई। आज जिस शक्तिपीठ की स्थापना गोवा में की गई है और उसके प्रतिक अन्य केन्द्रों पर है। ऐसे इस तत्व में त्रिगुणात्मक शक्तियों का समावेश किया गया है। और उन शक्तियों में प्रधान तत्व "लय तत्व" है। भविष्य में लोकल्याण का कार्य विश्व व्यापक होना आवश्यक है। और इस कार्य को करने में किसी भी कठीन मार्ग किा अवलम्ब, किसी भी व्यक्ति को न करना पड़े, इसी भूमिका के साथ आप भक्तों के माध्यम से इस ऊँकार साधना वक्त, आपके देहिक माध्यम विकास तो करवाया ही गया, साथ ही शक्तिपीठ का प्रधान तत्व लय तत्व, उस तत्व को भी आह्वानित किया गया।

आज जगत में कई व्यक्तियों को प्राप्त जीवन में पारमार्थिक सुखों की अमानत प्राप्त हो ऐसी चाह, इच्छा, सदिच्छा होती है। और ऐसे व्यक्ति समाज के साधक अवस्था के व्यक्तियों के पास मार्गदर्शनार्थ पहुँचने पर, ये साधक जिनका अधिकार भी न होते हुए समाज में "गुरू" नामक मान्यता प्राप्त की है, वे मार्गदर्शनार्थ आये व्यक्तियों को किसी कठिन साधन का अवलम्ब सेवा के रूप में सालों तक करने के लिये सूचित करते है। परन्तु योग्य, सही सच्चे गुरूमार्ग में जब कोई व्यक्ति पारमार्थिक सुखों का लाभ लेने की इच्छा से आती है, तब उस व्यक्ति के जीवन परिसर में जो भी दोषास्पद वलय होते है, उसे गुरू परम्परा के लोग समझ पाने में समर्थ न होने से यदि वे कोई जप, तप, साधन करने के लिये बतायें फिर भी उस व्यक्ति को कुछ लक्ष जप करने के

बावजूद "साधक–सिद्ध–साध्य इन अवस्थाओं में से पहली याने साधक अवस्था भी प्राप्त नहीं हो पाती। इसका कारण पूर्वजन्मपरत्वे या हम जिस घराने में जन्म लेते है, उस घराने के दोश, मानवों के जन्म के पश्चात उसके हिस्से में आते हैं। और ये दोषास्पद वलय अद्श्यरूप से होने पर भी कम–अधिक प्रमाण में प्रखर होते है। जब आपने पारमार्थिक सुखों का लाभ प्राप्त करने के लिये मार्गदर्शनानुसार साधना आरम्भ की, फिर भी साधक अवस्था की बाल्यावस्था होने के कारण, जो दोश अनेक जन्मपरत्वे, पीढ़ियों परत्वे धारण हो चुके हैं वे कर रहे साधना की फलप्राप्ति मिलने नहीं देते। जब ऐसे व्यक्ति गुरू के मार्गदर्शन का लाभ लेने की अपेक्षा से जाती है, उस वक्त उनको साधन सेवा सूचित करने से पहले, उनके गुरू का कर्त्तव्य होता है कि उस व्यक्ति के देहिक अवस्था के आसमंत में जो प्रतिकूल वलय है उनका विमोचन करना। उसी प्रकार से उस व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे देहिक माध्यम द्वारा उसे सूचित की गई साधना साकार हो, तो उनके देहिक माध्यम का भी इष्ट विकास किस साधन पद्धति ये याने दीक्षांत विधि परत्वे होगा वह साधन भी गुरूमार्ग में आये व्यक्ति को प्राप्त होना आवश्यक है। और जिन दीक्षा माध्यमों के प्रयोग से भक्तगणों का देहिक विकास करना है, उन दीक्षा को गुरूमार्ग की अधिकारी व्यक्तियों द्वारा संकल्प विधियों द्वारा दीक्षा सिद्ध होती है। और उन्हें भक्तों को प्रदान किया जाता है, उस वक्त इन दीक्षा विधियों में जो संकल्प समायोजित होता है वह भक्तों के माध्यम में उनके अनजाने में ही कार्यरत होकर, इन दीक्षांतपरत्वे उनके देहिक माध्यम का विकास होता है। परन्तु इनके बजाये जब केवल दीक्षा देने की विधि गुरू और शिष्य में होती है। तो केवल मैंने इन गुरू से दीक्षा ली है। इतना ही कहने के अलावा कोई अन्य अवस्था नहीं होती।

आज भारत में गतकालिन कई अवतारी पुरूषों ने समाधि मंदिर "तीर्थक्षेत्र" के रूप में अस्तित्व में है। कई भक्तभाविक उन तीर्थक्षेत्रों पर सलोसाल जाकर पूर्ण मनोभावना के साथ उस समाधि मंदिर की सेवा भी करते है। इन अवतारी पुरूषों ने ईश्वरीय आज्ञा से इस अवतार कार्य को इहजगत में "ईश्वरीय कार्य" के रूप में किया भी रहता है। इन स्थानों पर ब्रह्माण्ड शक्ति में से कोई विशिष्ठ गुण "तन्मात्र" स्वरूप में (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) धारण हुआ होता है। परन्तु इन गुणें में से कौनसा निश्चित गुण प्राप्त करने के लिये हमारा देहिक एवं अत्मिक तत्व पोशक है। इस बात को साधन मार्ग का अवलम्ब करने से पहले ही जानना आवश्यक है। सालों तक केवल देह से इन तीर्थक्षेत्रों का लाभ ले रहे है। याने हमारी पारमार्थिक उन्नति होगी ही ऐसा नहीं हैं इसका स्पश्ट एवं अनुभव सिद्ध उदाहरण याने आज हमारे सारें कार्य केन्द्रों पर श्री सद्गुरू पंत महाराज जी ने जो पदों की शब्द रचना की है, उन पदों को सुनते वक्त, सुने हुए हरेक शब्द के स्पंद हमारी देहिक अवस्था में, हमारे अनजाने में, अपने आप ही उत्पन्न होता हैं और इसक अनुभव आप सभी ने लिया है। इसका कारण दत्तपरम्परा के इस अवतारी पुरूष में शब्दब्रह्म का अविष्कार हुआ था इसलिये उन्होंने जो शब्द रचना श्री दत्तगुरू को समर्पित की, वह हरेक शब्द साक्षात परब्रह्म होकर, वह जिस वक्त हमारी वाणी द्वारा ध्वनित होते है और उस स्पंदवलय में हमारी वृत्ति तल्लीन (लीन, विलीन, घुलमिल) हो जाती है। आप भक्तों को इन बातों का यथायोग्य विचार करना चाहिये। केवल अवतारी पुरूषों के समाधि मंदिर है, इसलिये वहाँ पर जाना योग्य नहीं है।

हरेक अवतारी परम्परा के अवतारी पुरुषों का धर्म कृपाशीर्वाद प्रदान करना था फिर भी अवतार कार्य में उनमें जो भी प्रधान गुणधर्म ब्रह्मस्वरूप के तौर पर था, उसे वे हम मानवों के कल्याणार्थ इहजगत में ही रख कर गये हैं। जैसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति पंचतन्मात्राओं से हुई है, उसी प्रकार से मानवीय देह की धारणा भी पंचतन्मात्राओं से युक्त होने के कारण जब हम इन अवतारी परम्परा के सत्पुरूषों के दर्शन का लाभ लेते है, उस

वक्त उनमें जो ब्रह्मरूप तन्मात्र गुण था, यदि वह गुण हमारी देहिक अवस्था के तन्मात्रा में धारण होता तो हमारे देहिक अवस्था का तन्मात्र ब्रह्मरूप बन जाता हैं। और जब देहिक अवस्था का एक तन्मात्र ब्रह्मरूप हो जाता है तो वह देहिक अवस्था के अन्य चार तन्मात्राओं को भी ब्रह्मरूप कर देता है। और किसी भी दीर्घ जप–तप, साधन के प्रयोगों के बिना ही हमें साधक–सिद्ध–साध्य ये अवस्थायें सुलभता से प्राप्त हो जाती है। जिन गुरूओं को ऐसी अवस्था प्राप्त हुई है, उन्हीं से गुरूभेंट होने का लाभ पूर्व पुण्याई के कारण इहजन्म में होता है तो इहलोक में जो जीवन प्राप्त हुआ है उसका सार्थक हो जाता है। और जिसके जीवन का सार्थक इतनी शास्त्रशुद्ध पद्धति से हुआ हो, वो ही साधक इहजगत में लोककल्याण कर सकता है। वरना लोककल्याण होने के बजाये केवल लोकसंग्रह ही हो जाता है। और समाज में ऐसी बातें रूढ़ होने लगती है कि लोकसंग्रह करने का मतलब ही लोककल्याण है।

आप भक्तों में जो तन्मात्रा है वे देहकि एवं आत्मिक अवस्था में थी। मेरे माध्यम में भी वैसी ही तन्मात्रा है परन्तु पिछले चार तपों से श्री सद्गुरू कृपाशीर्वाद के पात्र होने के कारण वे पांचों तन्मात्रा ब्रह्मरूप बन गई। और आप भक्तों के शिरोड़ा में आठ साधना सम्मेलन लिये गये। पहले दो सम्मेलनों में मैंने आप लोगों द्वारा सामुदायिक साधना करवाई, मुलाकातों का लाभ करवाया। उस वक्त आप लोगों के अनजानें में ही मेरे वाणी माध्यम द्वारा आपका शब्द तन्मात्र देहिक–आत्मिक अवस्था में न रहकर ब्रह्मस्वरूप बन गया। और उसके पश्चात जो भी सम्मेलन हुए, उनका अनुभव आपने ब्रह्मानन्द अवस्था द्वारा किया ही, साथ ही मैं आपके अन्य बाकी चार तन्मात्र भी ब्रह्मस्वरूप बन गई। ब्रह्मस्वरूप में रूपांतरित हो गई। जो देह हमें प्राप्त हुई है, वह पंचतत्वात्मक (पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश) तत्वों से धारण हुआ है। और उसमें तन्मात्र एक अतिसूक्ष्म अवस्था होती है। और जिस वक्त गुरू को लोकल्याणार्थ किसी साधन को सिद्ध करना होता है, उसवक्त जिस शक्ति को आह्वानित किया जाता है वह सूक्ष्म से सूक्ष्म (अतिसूक्ष्म) होने के कारण भक्तों के देहिक माध्यमों में तन्मात्राओं का जागृत अवस्था में होना आवश्यक होता है। तो ही उस शक्ति का साधन सिद्धता के लिये धारण होना सम्भव होता है। और जब आप भक्तों के माध्यम इस कार्य के लिये सक्षम हुए, उसके बाद ही लय शक्ति को आह्वानित कर आप भक्तों के माध्यम में उस शक्ति की धारणा की गई। आठवें सम्मेलन में आप भक्त इस लय शक्ति को याने इस ब्रह्मशक्ति को धारण करके उपस्थित रहें, उस वक्त शिरोड़ा में आप सारे भक्तों के माध्यम की शक्ति को एक रूप कर उस शक्ति के "शक्तिपीठ" को आह्वानित किया गया। और आपके साधन माध्यम में अंतर्भूत शक्ति को इस शक्तिपीठ में अंतभूर्त किया गया। अब भविष्य में लोककल्याण का कार्य आसान, सुलभ मार्ग से याने केवल प्रार्थना माध्यम से मतलब आपके माध्यम में शब्दतन्मात्र है, उस शब्द तन्मात्र के द्वारा होगा।

शेष आगे के अंक में .....

सेवक,

।। शुभं भवतु ।।